International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(6): 60-63

Review Article

हिंद प्रशांत क्षेत्र में भारत का सुरक्षा उत्तरदायित्वः एक मूल्यांकन

Author (s): सुनील कुमार तिवारी[1*]

[1]*सहायक आचार्य,रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी.जी. कालेज, महराजगंज, उत्तरप्रदेश, भारत*

Corresponding Author: * सुनील कुमार तिवारी

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 23-10-2023
- **Accepted:** 02-12-2023
- **Published:** 12-12-2023
- **IJCRM:**2(6);2023: 60-63
- **©2023, All rights reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

सुनील कुमार तिवारी. **हिंद प्रशांत क्षेत्र में भारत का सुरक्षा उत्तरदायित्वः एक मूल्यांकन.** International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023; 2(6):60-63.

प्रस्तावना:

सम्पूर्ण विश्व एक मूल–भूत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तथा इसके साथ ही बदल रहा है विश्व का शब्द कोश, जिसमें आवश्यकता एवं महत्ता के आधार पर एक शब्द है 'इंडो–पैसिफिक' जिसने विगत कुछ वर्षों में विश्व की महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं की भू–रणनीति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में विश्व के कई देशों ने अपने–2 अधिकारपत्र में आवश्यकतानुसार विवरण तैयार कर रहे हैं। भौगोलिक तौर पर हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के कुछ भागों को मिलाकर समुद्र का जो हिस्सा बनता है, उसे हिंद–प्रशांत (Indo-Pacific Area) के नाम से जाना जाता है।

हिंद और प्रशांत महासागर की बढ़ती अहमियत ने 'हिंद–प्रशांत' क्षेत्र को एक भू–रणनीतिक आयाम के रूप में नई गति है, यही कारण है, कि 21वीं सदी के अधिकतम समय के लिए यह क्षेत्र वैश्विक राजनीति के स्वरूपों को आकार देगा जहां विश्व की महान शक्तियों के बीच (संयुक्त राज्य अमेरिका (यू० एस०) और चीन) प्रतिस्पर्धा जारी है, तथा दुनिया की कुछ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी नजर आती है। चीन की संदिग्ध नीतियां और आक्रामक विस्तारवादी प्रवृत्तियां जिसके चलते हिंद–प्रशांत क्षेत्र से जुड़े लगभग सभी देशों के हित बाधित हो रहे हैं, जिसे देखते हुए अमेरिका, आस्ट्रेलिया जापान, ब्रिटेन और यूरोपियन यूनियन जैसी विश्व की सभी प्रमुख शक्तियां हिंद–प्रशांत क्षेत्र को अपनी विदेश, रक्षा और सुरक्षा नीतियों का केंद्र बना रही है। ऐसे में इस क्षेत्र की बढ़ती अहमियत को समझा जा सकता है। दो महासागर को जोड़ने वाले 10 आसियान देश ''समावेशिता, खुलापन आसियान केंद्रीयता और एकता'' का सार बसता है। इस क्षेत्र का भौगोलिक दायरा अफ्रीका के पूर्वी किनारे से लेकर ओसियानिया तक जिसके साथ पैसिफिक द्वीप के देश भी जुड़े हैं। भारत इंडो ओसन रिम एसोसिएशन (IORA), ईस्ट एशिया समिट, आसियान डिफेंस मिनिस्टर्स मीटिंग प्लस, आसियान रीजनल फोरम बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कॉरिडोर जैसी व्यवस्थाओं में सक्रिय भागीदार रहा है, इसके अतिरिक्त भारत इंडियन नेवल सिम्पोजियम का भी आयोजक है, फोरम फॉर इंडिया–पॅसिफिक आइलैंड्स को–ऑपरेशन (FIPC) के जरिए भारत पैसिफिक दीप के मुल्कों के साथ भी साझेदारी बढ़ाने की कोशिशों में जुटा हुआ है।

कूटशब्दः आसियान, IORA, हिंद–प्रशांत क्षेत्र, इंडो–पैसिफिक, टीपीपी, Sting of pearls

1. हिंद–प्रशांत क्षेत्र का भू–राजनीतिक व भू–रणनीतिक महत्व

हिंद–प्रशांत क्षेत्र प्रशांत और हिंद महासागरों के संगम को व्याख्यायित करता है। दक्षिण पूर्व एशिया में दोनों महासागर आपस में मिलते हैं। जर्मन भू–राजनीतिज्ञ कार्ल होशोफर ने सर्वप्रथम 1920 के दशक में भूगोल और भू–राजनीति के लिए 'इंडो–पैसिफिक' शब्द का प्रयोग अपने लेखों–प्रशांत महासागर की भू–राजनीति'

(1924) बिल्डिंग पैन–आइडिया (1931), जर्मन कल्चरल पालिटिक्स इंडो–पैसिफिक स्पेस (1939) में किया था।

हिंद–प्रशांत एक नई अवधारणा है, लगभग एक दशक पहले विश्व ने हिंद–प्रशांत के बारे में बात करना प्रारम्भ किया, जिससे इसका उदय काफी महत्वपूर्ण रहा है। दोनों महासागर समुद्री मार्ग प्रदान करते हैं, जिससे विश्व का अधिकांश व्यापार इन्हीं महासागरों के माध्यम से होता है। भारत–प्रशांत क्षेत्र विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है, जिसमें चार महाद्वीप शामिल है – एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, और अमेरिका। हिंद–प्रशांत क्षेत्र हाल के वर्षो में भू–राजनीतिक रूप से विश्व की विभिन्न शक्तियों के मध्य कूटनीतिक एवं संघर्ष का नया मंच बन चुका है। साथ ही यह क्षेत्र अपनी अवस्थिति के कारण और भी महत्वपूर्ण हो गया है। वर्तमान में विश्व व्यापार की 75 प्रतिशत वस्तुओं का आयात–निर्यात इसी क्षेत्र से होता है तथा हिंद–प्रशांत से जुड़े हुए बंदरगाह विश्व के सर्वाधिक व्यस्त बंदरगाहों में शामिल है। विश्व ळक्च के 60 प्रतिशत का योगदान इसी क्षेत्र से होता है। यह क्षेत्र ऊर्जा व्यापार (पेट्रोलियम उत्पाद) को लेकर उपभोक्ता और उत्पादक दोनों राष्ट्रों के लिए संवेदनशील क्षेत्र बना रहता है। जिसमें कुल 38 देश शामिल है, जो विश्व के सतह क्षेत्र का 44 प्रतिशत और विश्व की कुल आबादी का 65 प्रतिशत हिस्सा है। यह क्षेत्र प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का एक बड़ा स्रोत और गंतव्य भी है। भारतीय और प्रशांत महासागरों में संयुक्त रूप से समुद्री संसाधनों का विशाल भंडार है, जिसमें अपतटीय हाइड्रोकार्बन, मीथेन हाइड्रेट्रस, समुद्री खनिज और पृथ्वी की दुर्लभ धातु शामिल है।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र एक भू–राजनीतिक क्षेत्र है, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के दो क्षेत्रों तक फैला है। वर्तमान के भू–राजनीतिक विश्व में 'हिंद–प्रशांत' क्षेत्र का तेजी से महत्व बढ़ता जा रहा है। भारत के आसियान मित्रों का इससे संबंध है, और इसने क्वाड साझेदारी को आगे बढ़ाने का रास्ता तय किया है। विदेश मंत्रालय ने इस क्षेत्र के 'महत्व को देखते हुए अलग से इंडो–पैसिफिक विभाग की स्थापना की है। भारत के लिए हिंद–प्रशांत वह विशाल समुद्री क्षेत्र है, जो उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट मे लेकर अफ्रीका के पूर्वी तटों तक फैला हुआ है। हिंद–प्रशांत के भूगोल को संभवतः अर्ध–वृत्त के रूप में वर्णित किया जा सकता है, ये सभी अर्ध–वृत्त पड़ोसी दक्षिण एशियाई देश हैं, जिन्होंने भारत के साथ हिंद महासागर के जल के अलावा सभ्यता' और सांस्कृतिक विरासत की साझेदारी है। वाह्य वृत्त पश्चिम और दक्षिण पूर्वी एशिया में खाड़ी देशों और आसियान देशों को समाहित करता है। 21वीं सदी राजनीतिक और सुरक्षा चिंताओं, प्रतिस्पर्धा, विकास, प्रौद्योगिकी और नवाचार का केंद्र हिंद–प्रशांत क्षेत्र ही होने वाला है। यही कारण है कि जर्मनी जैसे देश ने जिसके आर्थिक हित इस क्षेत्र से जुड़े हैं, के लिए अभी से रणनीति तैयार कर रखी है।

2. हिंद–प्रशांत, क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा–

हिंद–प्रशांत महासागर क्षेत्र में चीन आर्थिक व भौगोलिक विस्तार कर विश्व में अपना वर्चस्व कायम करना चाहता है। इसके बढ़ते आक्रामक रवैये से गंभीर संकट पैदा हो रहे है और यह भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गया है। इसमें क्वाड की सर्व–समावेशी भूमिका को विश्व के हित में प्रभावशाली रूप में देखा जा रहा है। हिंद– –प्रशांत महासागरीय क्षेत्र को स्वतंत्र, खुला और समावेशी बनाने के लिए विश्व की चुनौतियों पर एक साथ काम करने के लिए टोक्यो में आयोजित क्वाड देशों के तीसरे शिखर सम्मेलन में राष्ट्रीय सुरक्षा तथा संप्रभुता की रक्षा के साथ वैश्विक भू–राजनीतिक व भू–आर्थिक परिस्थितियों के कारण लोकतांत्रिक व तानाशाही देशों के बीच शक्ति–संतुलन स्थापित करने के लिए 13 देशों का आर्थिक मंच बनाया गया है, जिसमें भारत, ऑस्ट्रेलिया जापान, अमेरिका के साथ ब्रुनेर्ड, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, थाईलैंड, दक्षिणी कोरिया, मलेशिया फिलीपींस, इंडोनेशिया व वियतनाम शामिल है।

भारत, जापान, आस्ट्रेलिया के साथ अमेरिका को भी चेतावनी देने वाला चीन ताइवान पर कब्जा करने की साजिश करने में लगा है। डेट–ट्रैप से श्रीलंका के हंबनटोटा पोर्ट पर कब्जा कर सैन्य बेस बना चुका है तथा ग्वादर पोर्ट पर कब्जे के कारण बलूचों के विरोध व हमलों से चीन को वापस लौटने की नौबत आ गयी है। चीन द्वारा बांग्लादेश को क्वाड से दूर रहने की धमकी के बाद भी चटगांव पोर्ट के प्रयोग की अनुमति व मालदीव में उसकी साजिश को भारत नाकाम करने में सफल रहा है, और म्यांमार में उसकी गतिविधियों पर भी नजर बनाए हुए हैं। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती गतिविधि से भय व अस्थिरता का माहौल खड़ा हो गया है, जिससे दिनों–दिन विवाद गहराता जा रहा है, और युद्ध जैसी परिस्थितयां उत्पन्न हो रही हैं। अमेरिका द्वारा वर्ष 2017 में ट्रांस–पैसीफिक पार्टनरशिप (टीपीपी) से अलग हो जाने के बाद चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण असंतुलन की स्थिति बन गयी है। क्वाड के उद्देश्यों को लेकर सर्तकता दिखाते हुए हिंद–प्रशांत क्षेत्र के देश आई०पी०ई०एफ० के तहत चीन के ऋण–जाल में फंसे देशों को निकालने की रणनीति से विकास के लिए 50 अरब डालर की घोषणा की गई है तथा यूरोपीय देशों के साथ सहयोग बढ़ाने, पूर्वी व दक्षिणी चीन सागर में यूएन के कानून को सुनिश्चित करते, आतंकवाद, गैर–कानूनी तरीके से मछली मारने पर रोक, कोविड–19, जलवायु, तकनीक साइबर स्पेस की बात की गयी। इसके साथ ही सबसे महत्वपूर्ण चीन की गतिविधियों पर सैटेलाइट आधारित समुद्र की निगरानी पर सहमति बनी।

आईपीईएफ से घबराए चीन ने इसे आर्थिक नाटो कहते हुए उसके प्रभाव को नुकसान पहुंचाने वाला बताया और क्वाड शिखर सम्मेलन के दौरान पूर्वी एशिया में चीन व रूस के लड़ाकू विमान गश्त लगाते नजर आ रहे हैं। इससे पूर्व चीन क्वाड को एशियन नाटो कह चुका है, हालांकि क्वाड का मकसद सैन्य संगठन बनाना नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विचारों को बढ़ावा देने वाले देशों को स्वतंत्र व समावेशी हिंद–प्रशांत महासागरीय क्षेत्र के लिए प्रतिबद्ध व एकजुट करना है। भारत व रूस एक दूसरे के परम्परागत मित्र है, जबकि

चीन की विस्तारवादी चुनौतियों के लिए अमेरिका का साथ भी जरूरी है। बदलते भू–राजनीतिक परिस्थितयों व अंतर्राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के बीच भारत लिए नये व पुराने मित्रों में संतुलन बनाये रखना आवश्यक है, जिसका असर क्वाड सम्मेलन में बाखूबी देखने को मिला है।

अमेरिका की हिंद–प्रशांत रणनीति हिंदमहासागर क्षेत्र के महत्व को नया आयाम दे रहा है। ओबामा की ''एशिया–प्रशांत पुनर्संतुलन'' रणनीति से पीछे हटने के बाद एशिया–प्रशांत शक्ति संरचना में एक पावर वैक्यूम की तरह उभर चुका था। इसका उद्देश्य चीन के उदय को नियंत्रित करना और क्षेत्र में अमेरिकी नेतृत्व की रक्षा करना है। जापान एशिया–प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका का सहयोगी देश है तथा एक द्वीपीय राष्ट्र के रूप अपने असुरक्षाओं के साथ ही चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य क्षमताओं के प्रति जापान की चिंता ही है, जो उसको भारत और अमेरिका के साथ खुले रूप से इतने मजबूत पहल करने के लिए बाध्य रही है। सन् 1960 के दशक में आस्ट्रेलिया ने शीत युद्ध में अपनी कठिनाइयों से बचने के लिए हिंद प्रशांत क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश की। आस्ट्रेलिया एक ओर अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ाना चाहता है तथा दूसरी ओर यह द० पू० एशिया में भी अपनी उपस्थिति और भूमिका को बढ़ाना चाहता है। हांगकांग से सूडान तक भू–राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बंदरगाहों में निवेश करके चीन हिंद–महासागर क्षेत्र में रणनीतिक चोक प्वाइंटस पर अधिकार कर रहा है तथा मोतियों की माला नीति (Sting of pearls) के द्वारा हिंद महासागर में भारत की घेराबंदी कर रहा है जिसमे चीन के द्वारा विकास परियोजनाओं के लिए किया गया वित्तपोषण भी महत्वपूर्ण है। महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एण्ड रोड (बी०आर०आई०) परियोजना के तहत एशिया में बुनियादी ढांचा परियोनाओं को वित्तपोषण का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त होता रहा है। छोटे और मध्यम आकार के देश चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच फस गए हैं। एक ओर वे चीन के उदय के कारण होने वाले क्षेत्रीय व्यवस्था परिवर्तन से डरते हैं, वहीं दूसरी ओर वे चीन के आर्थिक विकास से प्राप्त होने वाले लाभ को गवांना नही चाहते। आस्ट्रेलिया, भारत, जापान, चीन, और अमेरिका के बीच तुलनात्मक क्षमता व्यवस्था निम्नलिखित है–

	Australia	**India**	**Japan**	**China**	**America**
GDP	US $ 1.33 trillion	US $ 2.66 trillion	US $ 5.06 trillion	US $ 14.72 trillion	US $ 20.95 trillion
GDP per Capital	US $ 51,680.3	US $ 1,927.7	US $ 40,193.3	US $ 10,434.8	US $ 63,206.5
Population Size	25,693,267	1.38 billion	125,836,021	1.41 billion	331,501,080
Defence Spending	US $ 27.5 billion	US $ 72.9 billion	US $ 49.1 billion	US $ 252 billion	US $ 778 billion

3. भारत का सुरक्षा परिवेश एवं रक्षा उत्तर दायित्व–

भारत हमेशा से हिंद–प्रशांत क्षेत्र के ढांचे में 'समावेशी' विकास की भू–राजनीति को जोड़ने पर जोर दिया है। भारत की हिंद–प्रशांत रणनीति दो तथ्यों पर आधारित है, पहला इस क्षेत्र में अपने राष्ट्रीय हितों को सशक्त बनाना और दूसरा समान विचारधारा वाले देशों के साथ मजबूत साझेदारी, गठबंधन और भागीदारी निभाना जिससे भारत की राष्ट्रीय क्षमताओं में वृद्धि के साथ ही इस क्षेत्र में भारत की पहुंच और प्रभाव में भी वृद्धि हो सके। भारत को क्षेत्र के साथ गहन आर्थिक एकीकरण करने के लिए व्यापार और वाणिज्य में पहले से ही मजबूत बहुपक्षीय कूटनीति, नीली जल नीति और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) का लाभ उठाने की आवश्यकता होती है। खुले, एकीकृत और संतुलित हिंद–प्रशांत के लक्ष्य को प्राप्त करने से इस क्षेत्र में भारत की शक्ति और प्रभाव में काफी वृद्धि होगी। क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास भारत के दृष्टिकोण (जिस पर सागरमाला जैसे योजनाओं की स्थापना की गई है) को हिंद–प्रशांत मैं भूमिका पर बढ़ते अंतरराष्ट्रीय विश्वास के लिए उपयोग करने की आवश्यकता है। यद्यपि हाल के वर्षों में, भारत की सक्रिय सैन्य कूटनीति रही है, लेकिन इस क्षेत्र में मित्र राष्ट्रों को हथियार निर्यात करने में असमर्थता के कारण उसे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा है। यह भारत के अपर्याप्त घरेलू रक्षा औद्योगिक आधार में निहित था। भारत देश रक्षा के क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने (मेक इन इंडिया के अंतर्गत) के साथ–2 हथियारों के निर्यात को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है, जिसके लिए हिंद–प्रशांत क्षेत्र एक बेहतर मंच प्रदान कर सकता है। भारत के कई साझेदार देश अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और इंडोनिशिया का मानना है कि द० चीन सागर, पूर्वी चीन सागर में भारत की उपस्थिति मूल रूप से चीन का मुकाबला करने के लिए हो। हालांकि भारत इस क्षेत्र में शांति और सुरक्षा के लिए सहयोग करना चाहता है तथा बातचीत के माध्यम से क्षेत्र के लिए एक सामान्य नियम आधारित व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता है। चीन के विरोध में भारत एक एकीकृत आसियान चाहता है, न कि विभाजित। चीन कुछ आसियान सदस्यों को दूसरों के खिलाफ करने की कोशिश के साथ एक तरह से 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति को क्रियन्वित करता है। भारत हिंद–प्रशांत की अमेरिकी विचारधारा का पालन नहीं करता है, जो चीन के प्रभुत्व को नियंत्रित करना चाहता है, इसके अलावा भारत उन चीजों की तलाश कर रहा है, जिससे वह चीन के साथ मिलकर काम कर सके।

भारत इस क्षेत्र का लोकतंत्रीकरण करना चाहता है पहले यह क्षेत्र अमेरिकी प्रभुत्व में हुआ करता था लेकिन इस बात का डर बना हुआ है कि यह क्षेत्र अब चीन के प्रभुत्व में न चला जाए लेकिन भारत इस क्षेत्र में किसी भी अभिकर्ता का वर्चस्व नहीं चाहता। तेजी से महाशक्ति बनते और आक्रमणकर्ता चीन का सामना करते हुए आस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका के साथ– 2 आसियान जैसे देश

अपने–चीन संबंधी नीतियों पर पुनर्विचार कर रहे हैं। भारत अपने क्वाड साझेदार देशों के साथ हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अपनी भूमिका को बढ़ा रहा है। भारतीय नौसेना ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में अमेरिकी नौसेना के साथ संयुक्त अभ्यास किया तथा जून 2020 में आस्ट्रेलिया के साथ भारत ने लॉजिस्टिक्स शेयरिंग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। जापान के साथ भी मे भारत ने सितंबर 2020 में म्यूचुअल लॉजिस्क्सि शेयरिंग एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए। भारत, आस्ट्रेलिया और जापान ने चीन के प्रभुत्व का मुकाबला करने के उद्देश्य से अप्रैल 2021 में एक आपूर्ति श्रृंखला पहल की शुरुआत की। कोरोना महामारी को लेकर जब पूरा विश्व कई चुनौतियों से निपटने में एकजुट था, यह भारत के लिए बेहद तार्किक है कि वो हिंद–प्रशांत क्षेत्र के मुल्कों के साथ चीन पर आर्थिक निर्भरता को कम करने के लिए एक वैकल्पिक सप्लाई चेन बनाए जिसमे अपने खुद के स्वास्थ्य ढांचा और रिसर्च एंड डेवलपमेंट को बढ़ावा दिया जा सके और जिसके अनुभव लेकर और बहुत कुछ सीखा जा सकेगा।

4. निष्कर्ष –

हिंद–प्रशांत क्षेत्र से जुड़े सभी राष्ट्रों को अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत उसका पालन करना चाहिए तथा प्रशांत–रणनीति नौवहन की स्वतंत्रता, बाधारहित व्यापार और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान पर ध्यान देना चाहिए। इस क्षेत्र के अन्दर उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सशक्त नौसैनिक क्षमताएं, बहुपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय संबंध और राष्ट्रों के साथ आर्थिक एकीकरण भारत के राष्ट्रीय हितों के लिए आवश्यक है। शांति और स्थिरता के लिए बहुध्रुवीयता को प्रसारित कर 'समुद्री डोमेन' में अनिवार्य रूप से सुरक्षा सुनिश्चित करना है। सदस्य देशों की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए। साथ ही सुशासन, पारदर्शिता और स्थिरता जैसे विषयों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारत को स्वदेशी रक्षा उत्पादन बढ़ाने के साथ ही अपने रक्षा उपकरणों के निर्यात को प्रोत्साहित करने की जरूरत है जो हिंद–प्रशांत में चुनौतीपूर्ण सुरक्षा मुद्दों के साथ अधिक सक्रियता के साथ भारत के लिए नए द्वार खोलेगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि की है कि हिंद–प्रशांत क्षेत्र में आर्थिक सहयोग और सामूहिक विकास को बढ़ावा देने पर बल दिया जाए, जहां आर्थिक एवं सामाजिक मोर्चे पर हितधारक राष्ट्रों की सक्रिय भागीदारी हो और वे एक खुले, परस्पर संबद्ध, समुद्र, सुरक्षित और प्रत्यास्थी हिंद प्रशांत पर लक्षित होने के साथ ही इस क्षेत्र के अधिक समावेशी एवं संवहनीय भविष्य को सुनिश्चित करें।

देश की थल सीमाओं के साथ–2 समुद्री सीमाओं की सुरक्षा भी बड़ी चुनौती है। समुद्री डकैतों, तस्करों व अन्य तरह की कई सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना देश कर रहा है। इन सीमाओं की सुरक्षा कैसे की जाए इसके लिए भारत पिछले कुछ वर्षों से लगातार प्रयास कर रहा है। हालांकि सूचना संलयन केंद्रों (आईएफसी) के जरिए समुद्री क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने को हिंद महासागरीय देशों के साथ व्हाइट जहाज था वाणिज्यिक जहाज संबंधी डाटा का आदान–प्रदान करेंगे। इसमें भारत के साथ करीब 21 देश सूचना साझा करते हैं, जिनकी सीमा हिंद महासागर से लगी है।

सन्दर्भ–

1. Kenneth Waltz, Theory of International Politics,First edition,McGraw Hill, New York,1979, P.131.
2. Jeffrey Robertson, 'Middle-power Definitions: Confusion Reigns Supreme, Australion Journal of International Affairs,71(4),2017,PP-335-370.
3. Mohan Malik, India and China: Great Power Rivals, Viva Delhi,2012, P.283.
4. Ralf Emmers and Sarah Teo, 'Regional Security Strategies of Middle Power in the Asia-Pacific, "International Relations of the Asia-Pacific, 15(2),2015, PP-190-192.
5. Adam Chapnick, 'The Middle Power', Canadian foreign Policy Journal, 7(2):1999, PP .73-82.
6. Dainik Jagran.
7. Rastriya Shahara.
8. World Focus.
9. Strategic Analysis.
10. Out look

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.